

UP Board BchYg Class 7 Hindi Chapter 25 भारत के महान शिक्षाविद् (महान व्यक्तित्व)

पाठ का सारांश

पंडित मदनमोहन मालवीय:

पण्डित मदनमोहन मालवीय का जन्म 26 दिसम्बर, 1861 ई० को इलाहाबाद में हुआ। इनके पिता ब्रजनाथ मालवीय ने इनकी आरम्भिक शिक्षा धर्म ज्ञानोपदेश पाठशाला में कराई। अपने शिक्षक देवकीनन्दन की प्रेरणा से मालवीय जी कुशल वक्ता बने। इन्होंने स्नातक तक शिक्षा पाने के बाद सरकारी हाईस्कूल में शिक्षक का पद संभाला। अपनी वक्ता और शिक्षण शैली के कारण ये लोकप्रिय शिक्षक के रूप में विख्यात हुए।

मालवीय जी में बचपन से ही समाजसेवा और देशभक्ति की भावना थी। ये धार्मिक संकीर्णता और साम्प्रदायिकता के घोर विरोधी थे। सन् 1902 ई० में ये उत्तर प्रदेश के एसेंबली चुनाव में सदस्य निर्वाचित हुए। सन् 1910 से 1920 तक सदस्य रहे। 1931 ई० में लन्दन में द्वितीय गोलमेज सम्मेलन में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए इन्होंने साम्प्रदायिकता का विरोध किया। | मालवीय जी ने निरक्षरता को दूर करने और शिक्षा के प्रसार के लिए अनेक प्रयत्न किए। ये स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक थे। इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए देशवासियों से धन माँगा। काशी नरेश ने इसके लिए पर्याप्त धन और भूमि दी। इनकी ईमानदारी, लगन और परिश्रम के कारण ही काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना सन् 1918 ई० में हुई। इसमें जितने विषयों के अध्ययन की व्यवस्था है, उतनी एक साथ शायद ही कहीं हो। मालवीय जी राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रबल समर्थक थे। सन् 1946 ई० में इनका निधन हो गया। उनका यश और कीर्ति भारतीयों के मन में जीवित है।

सर सैयद अहमद खाँ:

सर सैयद अहमद खाँ का जन्म 17 अक्टूबर, 1817 ई० को दिल्ली के एक सम्पन्न परिवार में हुआ। इनके पिता का नाम मीर मुक्तकी और माता का नाम अजीजुन्निसा बेगम था। इनकी शिक्षा अरबी, फारसी, हिन्दी, अँग्रेजी के अनेक विद्वानों द्वारा हुई। इन्होंने पहले मुगल दरबार में नौकरी की। इसके बाद ये अँग्रेजों की नौकरी करने लगे। अनेक पदों पर कार्य करके सन् 1876 ई० में बनारस के स्माल काजकोर्ट के जज के पद से सेवानिवृत्त हुए। अँग्रेजों ने इन्हें 'सर' की उपाधि दी।

अहमद साहब बहुत मितव्ययी थे। इन्होंने एक पुस्तक 'असबाबे बगावते हिन्द' लिखी। इनकी दृष्टि में 1857 के विद्रोह का कारण भारतीयों को कानून बनाने से दूर रखना था। इन्होंने भारतीय मुस्लिम समाज को दिशा-निर्देश दिया। ये मुस्लिमों में बौद्धिक चेतना जाग्रत करना चाहते थे। इन्होंने 'तहजीबुल एखलाक'. पत्रिका निकाली। इसके अनुसार धर्म के साथ-साथ आधुनिक विषयों और विज्ञान का ज्ञान प्राप्त करना भी जरूरी था। इनके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य छात्र की बौद्धिक चेतना उजागर करना और उसके व्यक्तित्व का निखार करना है।

शिक्षा के विकास के लिए इन्होंने अनेक संस्थाएँ खोलीं। इनमें मुरादाबाद को फारसी मदरसा और साइंटिफिक सोसाइटी गाजीपुर और अलीगढ़ प्रमुख हैं। इन्होंने मोहम्मडन एजुकेशनल कान्फ्रेंस की स्थापना की। इन्होंने समाज के लोगों से चन्दा एकत्र करके सन् 1875 ई० में मुहम्मडन एंग्लो ओरिएंटल कॉलेज, अलीगढ़ की स्थापना की, जो बाद में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह इनकी अमूल्य देन है।

मुक्त विचारों, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और साम्प्रदायिक सौहार्द के कारण सर सैयद अहमद खाँ सर्वत्र : सम्मानित होते थे। 25 मार्च, सन् 1898 को इनका निधन हो गया।